

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 04.08.2016)

■ अंक-606 ■ तारीख- 05 अगस्त 2016, श्रावण शुक्ल पक्ष -3 ■ शुक्रवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया

(पृष्ठ-1)

श्री सत्यसाई - अनमोल वचन



रोग का मुख्य कारण

इस देश के रोगों का मुख्य कारण अपौष्टिकता है, शारिरिक नहीं वरन् आत्मिक अपौष्टिकता। आध्यात्मिक साधनाओं का अभाव तथा आध्यात्मिक शासन की अवहेलना है। इस रोग के पूर्ण रूप से फैल जाने के कारण लोग शास्त्रों में लिखी औषधियों के नाम रटे फिरते हैं, परन्तु वे औषधि का सेवन नहीं करते। प्रत्येक घर एवं ग्राम में जीवन धारक आत्मिक अमृत पहुँचाने की नलिकाएँ शुष्क हो गई हैं। इस कारणवश दुर्बलता, अचेतना तथा स्नायु के व्यवस्था आदि सापेक्ष चिन्हों सहित अपौष्टिकता व्यापक हो गई है।

श्लोक-दोहा



। Hk jkf u dg dgfi fdu
d by jleq efji ky A
y [kuq Hjr q fji qeul fu
Hk dqjh nj | ky A

HkKfZ& तब रानी ने डरकर कहा- अरी! कहती क्यों नहीं श्री रामचन्द्र, राजा, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न कुशल से तो हैं यह सुनकर कुबरी मंथरा के हृदय में बड़ी ही पीड़ा हुई।

pk6kz
dr fl [k nb gefg dkn ekbA
xlyq djc dfg dj cyq i kbA
jlefg NkM d by dfg vkt W
t fg t usq nb t qjkt AA

HkKfZ& (वह कहने लगी-) हे माई! हमें कोई क्यों सीख देगा और मैं किसका बल पाकर गाल करूँगी (बढ़-बढ़कर बोलूँगी)। रामचन्द्र को छोड़कर आज और किसकी कुशल है, जिन्हें राजा युवराज पद दे रहे हैं।

सुविचार



सिर्फ असाधारण अवसरों की राह नहीं देखनी चाहिए। छोटे-से-छोटे अवसर का उपयोग किया जाए तो बड़े अवसर सामने आकर स्वयं खड़े हो जाते हैं।-स्वेट मार्डन काम करने से पहले सोचना बुद्धिमानि, काम करते हुए सोचना सतर्कता और काम करने के बाद सोचना मूर्खता है।

&n; kua | j Lor h
कर्म जीवन में आनंद देता है और दु:खों को भूलने का साधन बनता है। &Lokhj ler HkZ
कर्म करने पर ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं। तुम कर्मफल का कारण मत बनो और अपनी प्रवृत्ति कर्म करने में रखो। &J renHk onx h k
कर्म निर्णायक है सुख और दु:ख का। पाप कर्म से दु:ख, शुभ कर्म से सुख प्राप्त होता है और न किया हुआ कर्म कोई फल नहीं देता। &osQk

गर्भवती महिलाओं के लिए नई मुहिम, हर महीने 9 तारीख को नि:शुल्क में जांच



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22वीं बार मन की बात की। उन्होंने रियो ओलम्पिक में गए खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। साथ ही, बारिश और बाढ़ के कारण होने वाली बीमारियों को लेकर देशवासियों को सचेत किया। वहीं, गर्भवती महिलाओं के लिए नई मुहिम का एलान किया। बता दें कि पहली बार पीएम ने 3 अक्टूबर 2014 को देश की जनता से रेडियो के जरिए मन की बात की थी। कहा- प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान का लाभ उठाएं। मोदी ने कहा- प्रेग्नेंट माताओं की चिंता सताती है। लेकिन प्रसव के दौरान कई मौ-बच्चे की मौत होती है। हालांकि, इस दर में अब कमी आई है। लेकिन हम अभी भी कई लोगों का जीवन बचा नहीं पा रहे हैं। सरकार ने कुछ महीनों से एक नई मुहिम को शुरू किया है। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान, इसका लाभ उठाएं। हर महीने 9 तारीख को सरकारी अस्पताल में नि:शुल्क जांच की जाएगी। हर गरीब से आग्रह है कि इस सेवा का लाभ उठाएं, ताकि कोई तकलीफ हो तो पहले से ही उपाय किया जा सकता है।

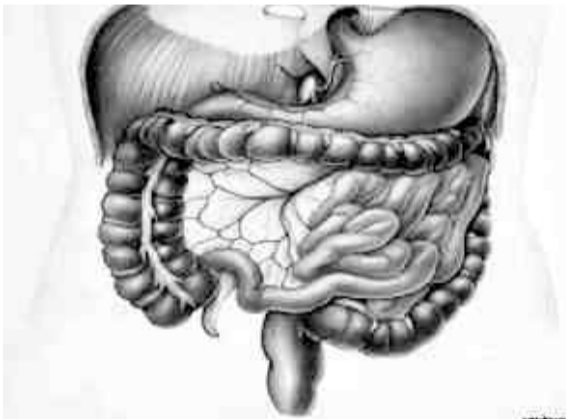
श्री गणेशाय नमः

किसी भी काम का शुभारंभ यानी गणपति की आराधना। इसीलिए आप शादी ब्याह के कार्ड पर इस मंत्र को देखते होंगे। यहीं वजह है कि मुहावरा यानी श्रीगणेश करना (किसी भी काम की शुरुआत करना) का जन्म इसी से हुआ। लिंगपुराण में भगवान शिव ने गणेश जी को कहा है कि गणेश तुम विघ्नविनाशक हो और तुम विघ्नगणों के स्वामी होने की वजह से त्रिलोक में सर्वत्र पूजनीय और वंदनीय रहोगे। किसी भी पूजा से पहले गणेश जी की पूजा की जानी चाहिए। माना जाता है कि हर शुभ काम से पहले गणेश पूजा करने से विघ्नों का नाश होता है। भगवान गणेश विघ्नहर्ता हैं। कहा जाता है भगवान गणेश की परिक्रमा कर के पूजा की जानी चाहिए। परिक्रमा करते वक्त अपनी इच्छाओं को लगातार दोहराते रहना चाहिए। इसलिए किसी भी काम को शुरू करने से पहले ऊँ गणेशाय नमः का जाप किया जाता है यानि इससे कोई भी काम बिना विघ्न के संपन्न हो जाता है और उसमें शत-प्रतिशत कामयाबी मिलती है। भगवान गणेश ऐसा करने वाले भक्तों

की मनोकामना जरूर पूरी करते हैं। भक्तों को विनायक के मंदिर की तीन परिक्रमा करनी चाहिए। इसके अलावा भक्त अगर भगवान विनायक को खुश करना चाहते हैं और अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं तो उन्हें विनायक के नाम से तर्पण करना चाहिए।
i tk esbu kr kd kj [k/, ku & भगवान गणेश को दुर्वा और मोदक बेहद प्रिय हैं। दुर्वा के बगैर उनकी पूजा अधूरी समझी जाती है। भगवान गणेश को तुलसी नहीं चढ़ानी चाहिए वर्ना अशांति होती है। पद्म पुराण के मुताबिक उनकी पूजा दूब से की जाती है। घर में कभी भी तीन गणेश की पूजा नहीं करनी चाहिए। भगवान गणेश की तीन प्रदक्षिणा ही करनी चाहिए। भगवान गणपति की आराधना में नामाष्टकका स्तवन अवश्य करना चाहिए। जिससे चतुर्थी के देवता भगवान वरद विनायक प्रसन्न होकर अभीष्ट फल की प्राप्ति अवश्य करावें। हरित वर्ण का दुर्वा जिसमें अमृत तत्व का वास होता है, उसको भगवान श्री गणेश पर चढ़ाने से समस्त विघ्नों का विनाश हो जाता है तथा अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।



हमारी छोटी आंत की संरचना



यह आमाशय से लेकर बड़ी सेमीमीटर लंबा पहला भाग आंत तक खुलने वाली अग्नाशय के सिरे को चारों ओर से घेरे होता है उसे होती है जो नाभि क्षेत्र में बड़ी आंत से घिरी हुई होती है। इसका घोंडे की नाल के आकार का लगभग 25

पेशियों की बनी होती है, जिसमें बाहर की ओर लंबाकार तंतु तथा इसके नीचे वृत्ताकार तंतुओं की परत होती है।
3. अवश्लेषिक परत अवकाशी ऊतक की बनी होती है। ग्रहणी में कुछ खास प्रकार की छोटे-छोटे गुच्छों के रूप में ग्रंथियाँ पाई जाती हैं। इन ग्रंथियों को ब्रूनर्स ग्रंथियाँ कहा जाता है। इनसे एक चिपचिपा क्षारीय तरल पैदा होता है जो आमाशय के खट्टे पदार्थों से ग्रहणी की आंतरिक परत की रक्षा करता है।
1. बाहरी सीरमी परत पेरिटोनियम की बनी होती है।
2. पेशीय परत अनैच्छिक

सकारात्मक सोच

विशुद्ध सामर्थ्य इस तथ्य पर आधारित है कि व्यक्ति मूल रूप से विशुद्ध चेतना है, जो सभी संभावनाओं और असंख्य रचनात्मकताओं का कार्यक्षेत्र है। इस क्षेत्र तक पहुँचने का एक ही रास्ता है। प्रतिदिन मौन ध्यान और अनिर्णय का अभ्यास करना। व्यक्ति को प्रतिदिन कुछ समय के लिए बोलने की प्रकिया से दूर रहना चाहिए और दिन में दो बार आधे घंटे सुबह और आधे घंटे शाम अकेले बैठकर ध्यान लगाना चाहिए। इसी के साथ उसे प्रतिदिन प्रकृति के साथ सम्पर्क स्थापित करना चाहिए और हर जैविक वस्तु की बौद्धिक शक्ति का चुपचाप अवलोकन करना चाहिए। शांत बैठकर सूर्यास्त देखें समुद्र या लहरों की आवाज सुनें तथा फूलों की सुगंध को महसूस करें। विशुद्ध सामर्थ्य को पाने की एक अन्य विधि अनिर्णय का अभ्यास करना है। सही और गलत, अच्छे और बुरे के अनुसार वस्तुओं का निरंतर मूल्यांकन है - "निर्णय"। व्यक्ति जब लगातार मूल्यांकन, वर्गीकरण और विश्लेषण में लगा रहता है, तो उसके अन्तर्मन में द्वंद्व उत्पन्न होने लगता है जो विशुद्ध सामर्थ्य और व्यक्ति के बीच ऊर्जा के प्रवाह को रोकने का काम करता है। चूंकि अनिर्णय की स्थिति दिमाग को शांति प्रदान करती है। इसलिए व्यक्ति को अनिर्णय का अभ्यास करना चाहिए। अपने दिन की शुरुआत इस वक्तव्य से करनी चाहिए- "आज जो कुछ भी घटेगा, उसके बारे में मैं कोई निर्णय नहीं लूँगा और पूरे दिन निर्णय न लेने का ध्यान रखूँगा।"



मानव मन के बोल



❖ मन मयूर नाच उठा ❖
कैलाश मानसरोवर यात्रा...
मैं जब कैलाश मानसरोवर के दर्शन करने गया, मैं गया नहीं, मेरे कैलाशपति भोलेनाथ ने, शंकर भगवान ने, नीलकण्ठ महादेव ने मुझे बुला लिया, देवेन्द्र भैया मेरे साथ थे और हम जब यहाँ से नेपाल गये, पशुपति नाथ के दर्शन किये, हमारा मन गदगद हो गया। हे पशुपति नाथ, ओम् नमः शिवाय, हम पर कृपा करो। वो शिवकुड़ी, वो चन्दन घिसना, वो आपका अभिषेक करना। हे टाकुर, मैं आपका वही छोटा-सा बच्चा हूँ। जब पशुपतिनाथ का आशीर्वाद लेकर नेपाल व चीन की सीमा पर पहुँचे हेलीकॉप्टर से, हमें लगा कि हमारा जीवन सफल हो गया। आज भी जब स्मरण करता हूँ, जिस पुल को पार करके चाईना की सीमा पर पहुँच रहे थे, उस के पार चीन और इस पार नेपाल है। मैंने सोचा, मेरा मानव धर्म सफल हो गया, मेरा मानव जीवन सफल हो गया मेरा इस दुनिया में आना सफल हो गया। मेरे परिवार को सफलता मिल गई, मेरी नारायण सेवा संस्थान सफल हो गई, मेरे संगीतकार सफल हो गये, सब सफल हो गये। जब कैलाश पर्वत पर शंकर भगवान के दर्शन किये, मेरे नेत्र सफल हो गये, मेरा रोम-रोम तरंगित हो गया, मेरी देह भी सफल हो गई, मेरा मन मयूर नाच उठा।
ऊँ नमः शिवायः।
छोड़ दीजिए पिछली कटु यादों को, छोड़ दीजिए कि किसी ने आपका अनादर किया था। मन को खाली कर दीजिए, इस मन मयूर में गंदगी नहीं भरनी है-बाबू। यदि किसी धर्मपत्नी का पति उनसे कम बोलता तो कोई बात नहीं, आपके मन में भक्ति को ले आइये, आपके मन में सेवा को ले आइये, आपके पति देव को क्षमा कर दीजिए। इस दुनिया में नाना प्रकार के लोग हैं, fgl h; kl akj ea Hkfr &Hkfr dsy kx | cl sfg &fey pkfy; sunh ulo | a kx * कुछ मनुष्य, पुतला तो मनुष्य का है लेकिन अन्दर से भेड़िये हैं, अन्दर से चीते हैं, किसी के अन्दर रीछ है, किसी के अन्दर सोंप बैठा हुआ है। आप अपने धर्म की रक्षा कर लीजिए, आप उनके लिए दुराशीर्वाद मत दीजिए, आप उनको श्राप मत दीजिए। आप प्रभु से कहिए, उनका भी मंगल हो, उनका भी कल्याण हो। जो भी आपके परिवार के यदि कोई महानुभाव कम बोलते हैं, आप प्रेम से बोलिए कि आप अपने मानव धर्म को खोईयेगा मत, आप इसको तिलाजलि मत दीजिए, श्रीराम भगवान ने कहा था -
यदि आज वन जाऊँ मैं, किस पर हाथ उठाऊँ मैं।
पूज्य पिता या माता पर, या भरत से भ्राता पर।
और किस लिए राज्य मिले, हे जो तख्तो ताज मिले।
मुझको महान् महत्व मिला, स्वयं त्याग का तत्व मिला।
माँ तुम तनिक कृपा कर दो, बना रहे वो वर दो।

❖ लोभ-लालच ❖

क्या है? धन... कौन? निर्धन ...
त्याग का महत्त्व ये त्याग धर्म है, मानव धर्म के 1111 दिव्य स्तम्भों में एक स्तम्भ है त्याग। जो चीज आपको प्राप्त नहीं हुई हो, उसकी इच्छा का त्याग कर दीजिए, दूसरो के महलों पर लालच मत कीजिए। आपकी झोपड़ी आपको मुबारक हो। मुझे याद है, हमारे ननिहाल के बंगलों के बड़े-बड़े झरोखे थे, करोड़पति हमारा ननिहाल था, लेकिन जब मेरी पूज्य माताजी मेरे पूज्य पिताश्री से विवाह करके भीण्डर ग्राम में आई तो हमारे पास गिरवी का एक झोपड़ा था, जिसमें ऊपर केल्लू की छत थी। गोबर से आँगन लीपा जाता था, उसकी दीवारें मिट्टी की बनी हुई थी। फिर मेरी पूज्य माताजी ने बार-बार उनके पिताजी-माताजी, मेरे नानाजी-नानीजी को कहा कि आपकी बड़ी कृपा हो गई। मुझे को कितने महान् पतिदेव मिल गये, जो धर्म पर चलने वाले हैं। ये सत्य बोलने वाले हैं, ये शिवशंकर के पुजारी हैं, ये रघुनाथ जी के भक्त हैं, ये नृसिंह भगवान की अनुकम्पा प्राप्त करते हैं। मेरी माताजी ने बार-बार अपने भाग्य की सराहना की।
क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

एक बार की बात है, राजा भोज कवि कालिदास के साथ ज्ञान चर्चा करते हुए वन भ्रमण कर रहे थे। दोनों ही चर्चा में इतने मग्न थे कि संध्या ढले लौटते समय रास्ता ही भूल गए। रास्ते में उन्हें घास का गट्ठर उठाए चली जा रही वृद्धा दिखाई दी। राजा उसके पास गए, पूछा 'माँ, रास्ता किधर जाता है? वृद्धा ने जवाब दिया, 'बेटा, रास्ता तो हमेशा यहीं रहता है। मुसाफिर इस पर आया जाया करते हैं। तू बता, किधर जाना चाहता है? भोज बोले, हम मुसाफिर हैं, 'रास्ता भटक गए हैं।' वृद्धा बोली, मुसाफिर वह होता है, जो निरंतर चलता रहता है, जैसे चन्द्रमा और सूरज। ये निरंतर चलते रहते हैं। आखिर तुम हो कौन? जवाब मिला, हम राजा हैं।' वृद्धा बोली, 'तुम गलत कहते हो, राजा तो केवल दो हैं। एक आत्मा और दूसरा परमात्मा। परमात्मा राजा इसलिए है कि उसका राज सारे संसार में दिखाई देता है। आत्मा, राजा इसलिए है कि वह शरीर पर नियंत्रण रखती है।' राजा ने कालिदास के कान के निकट मुँह सटाकर कहा, 'यह वृद्धा तो महान ज्ञानी है।' दोनों वृद्धा के सामने हाथ जोड़कर बोले— 'माँ, वास्तव में हम भटके हुए साधारण लोग ही हैं।' हमें राजा और विद्वान होने का क्षणिक भ्रम हो गया था। उसी अहंकार में तुमसे रास्ता पूछने से पहले हमने शिष्टाचार का पालन नहीं किया। किसी से कुछ जानने के लिए उसके आगे झुककर प्रणाम करना चाहिए, जो हमने नहीं किया। यह सुनते ही वृद्धा ने हंसकर कहा— 'बेटा! सीधे चले जाओ, धार नगरी पहुँच जाओगे, पर अब कभी भटकना मत।' बंधुओं! यह कथा प्रसंग हमें इंगित करता है कि जिस दिन ईश्वर, संसार, आत्मा और मानव शरीर के संबंधों की गरिमा का हमें ज्ञान हो जायेगा, उसी दिन अपने जीवन की वास्तविकता का भी बोध होगा। सहज आत्म बोध की स्थिति वस्तुतः स्वाभाविक है। इसे प्राप्त करने के लिए अहं को मिटाना पहली शर्त है। आत्म बोध की दिशा उर्ध्वगामी है, विषयों से ऊपर है। भ्रम पालने से कोई लाभ नहीं है। आत्म बोध को न कोई सीख सकता है, न सिखा सकता है। स्व अनुभूति का निरन्तर अभ्यास ही इसकी दिशा है। व्यर्थ के भ्रम की दीवार खड़ी करने का उपक्रम जीवन भर चलता है। मनुष्य इधर-उधर भटकता है, छटपटाता है। वह अपने स्वरूप की खोज में बाहर दौड़ता है, जब कि जरूरत इस बात की है कि अंतस में स्थित होकर हम अपने आपको खोजें। आत्म स्वरूप में स्थिर हो जाना ही आत्म बोध का प्रथम चरण है।

स्कूल ड्रेस का निःशुल्क वितरण



उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में स्कूल गणवेश का निःशुल्क वितरण किया गया। निदेशक वर्दना अग्रवाल ने बताया कि गोगुन्दा तहसील के पदराड़ा, जरगा, कमोल व आसपास के क्षेत्र में स्कूली बच्चों को 600 गणवेश व 1000 बिस्किट के पैकेटों का वितरण किया गया। इस अवसर पर संस्थान साधक पलक अग्रवाल व जया भल्ला आदि भी उपस्थित थे।

बोक बक दोभाकोल (पर्यटन स्थल)

मेघालय की धरती अपनी बेशुमार रोचक रोमांचक गुफाओं के लिए मशहूर है। इनके कारण ही मौजूदा समय में देश का प्रमुख पर्यटन स्थल बन गया है। यहाँ 1,000 आश्चर्यजनक गुफाएं हैं और बोक बक दोभाकोल इनमें से एक है, जो बेहद मशहूर है। 1,051 मीटर लंबी यह गुफा अपनी खूबियों के चलते अलग पहचान रखती है और वह इसकी हकदार भी है। लेकिन बोक बक दोभाकोल के साथ एक अनचाही चीज भी जुड़ी है जो पर्यटकों को थोड़ा परेशान कर सकती है और वह है इसका ठीक से सीमांकन न होना। सही प्लानिंग न होने से पर्यटकों का कई बार यहां समय भी खराब होता है।

बोक बक दोभाकोल नदी की सीमा पर स्थित है और बहुत बार इसकी खाली जगह नदी के विस्तार का शिकार भी हो जाती है। कई बार नदी का पानी पूरी बोक बक दोभाकोल गुफा में भर जाता है। हालांकि, ऐसा हमेशा नहीं होता है और पहले से पता करके यहां घूमने जा सकते हैं। नदी की यह करीबी उसकी सबसे बड़ी खूबी और खूबसूरती का कारण भी है।

बोक बक दोभाकोल की गुफा मेघालय की अकेली ऐसी गुफा है जो अपनी आलौकिकता की वजह से पर्यटकों को अपनी ओर सबसे ज्यादा खींचती है। लोग यहाँ अपनी उत्सुकता और जिज्ञासा के साथ साल भर आते रहते हैं।

बोक बक दोभाकोल की एक और सबसे बड़ी खासियत यह है कि बरसात में इसका अधिकतर हिस्सा पानी से भर जाता है। वास्तव में, बरसात में इसके भीतर जाना असंभव हो जाता है। इसलिए यदि आप इस गुफा में घूमने की योजना बना रहे हैं तो ध्यान रखें कि मानसून से आपकी टाइमिंग न टकराए।

यह भी ध्यान रखें कि जब आप बोक बक दोभाकोल जा रहे हैं तो आपके पास सभी सुरक्षात्मक और प्राथमिक चिकित्सा से जुड़े साधन हों। बोक बक दोभाकोल की गुफा में बाकी गुफाओं के मुकाबले अतिरिक्त सतर्कता बरतने की जरूरत होती है। इसलिए आप यहाँ आने से पहले पेशवर गाइड कर लें, जो आपको सही रास्तों से गुफा में भ्रमण करा सके।



सावधान होने से बेहतर है- साहसी होना

हम वही करना पसंद करते हैं जिसमें सफलता सुनिश्चित हो, हम मानते हैं कि जोखिम उठाना तो मूर्ख लोगों का काम है, हम हर नया काम हाथ में लेने से पूर्व कई बार सोचते हैं, यकीनन सोचना भी चाहिए परन्तु इतना भी ना सोचे की साहस का नष्ट ही हो जाये, हम ज्यादातर सावधान रहना पसंद करते हैं और छोटे व तुच्छ तनाव और संघर्ष से बचने का प्रयास करते हैं जो एक दिन हमारी नाकामी व असफलता का मार्ग बन जाता है। किसी भी काम के परिणाम के दार से दहशत में आकर उस चुनौतीपूर्ण कार्य को हाथ न लगाना सावधानी नहीं बल्कि पलायन की पहचान है। साहसी व पराक्रमी लोगों की जीवनी पढ़ कर हम निश्चित तौर पर कह सकते हैं की सावधान होने की बजाय साहसी होना बेहतर है।

तकदीर हमेशा युवाओं को प्रेयसी होती है क्योंकि युवा हमेशा सावधान कम और उत्साही ज्यादा होते हैं तथा वे साहस दिखाकर तकदीर के स्वामी ही नहीं बादशाह बन जाते हैं। जब हम अनजानी बातों से डरते हैं, परिवर्तन से घबराते हैं तो इसका सीधा अर्थ है की हम नया नहीं लकीर के फकीर बने रहना चाहते हैं, अपने सपनों को पूरा करने से डरते हुए अपनी जिन्दगी में बदलाव से पहले यथास्थितिवादी बने रहना चाहते हैं जबकि हम भूल जाते हैं की हर महान आविष्कार इन अनजानी स्थितियों के प्रति साहस दिखने से ही संभव हुई है। स्वामी विवेकानंद का कथन कि—'विश्व के अधिकांश लोग इसलिए असफल हो जाते हैं की उनमें समय पर साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं। इस प्रकार एक आम आदमी को वास्तविक जिन्दगी जीने के लिए साहस रूपी जज्बे की उतनी ही जरूरत होती है जितनी किसी महान योद्धा को। साहस हर व्यक्ति में होता है, जरूरत बस इतनी है कि वो खुद को पहचाने, क्षमता को जाने और पूर्ण निष्ठा, तन्मयता और एकाग्रता के साथ मंजिल की ओर एक मजबूत कदम बढ़ने की।



पर्यटन स्थल चेन्नई

चेन्नई में पर्यटन के कई आकर्षण हैं। चेन्नई के समुद्र तट पर स्थित रिसोर्ट बहुत सुंदर हैं। मनीला तट चेन्नई का गौरव है। ऐतिहासिक सेंट जॉर्ज किले की यात्रा आपको प्राचीन समय में खींच ले जाती है। चेन्नई में कई मंदिर, चर्च और आध्यात्मिक केन्द्र हैं। यहाँ के पार्थसारथी मंदिर और कपिलेश्वर मंदिर का निर्माण 13 वीं सदी में हुआ था और यह द्रविड़ वास्तुकला का नमूना है। सैन्थोम कैथेड्रल एक प्रमुख तीर्थ स्थल है। राज भवन एस्टेट में गिंडी राष्ट्रीय उद्यान में स्नेक पार्क है, जिसमें साँप व अन्य रेंगने वाले जानवरों का बड़ा संग्रह है। सन् 1882 में मैडम ब्लावत्सकी और कर्नल ओलकॉट द्वारा स्थापित अड्यार मुख्यालय में हुए थियोसॉफिकल आंदोलन का सूत्र चेन्नई था। चेन्नई में घूमना पर्यटकों को तमिलनाडु की इस आकर्षक भूमि के भिन्न भिन्न अनुभव देता है। मंदिरों की यात्रा शुरु करने का सबसे अच्छा स्थान ममल्लापुरम है, फिर वहाँ से कांचीपुरम, चिदंबरम, भरतनाट्यम की जन्म भूमि होने के लिए प्रसिद्ध तंजावुर, तिरुचिरपल्ली और रामेश्वरम हैं।



मुस्कान मानवता की

१६kuo /eZUkky k d k "KVe-16/3 q 1/2

कर्म प्रधान जीवन ही सार्थक

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ,
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा'

आज तारीख 23 सितम्बर 2015 को प्रातः 8 बजकर 03 मिनट पर जब मैं सुकांत भैया मोहन्ती, जो कि उड़ीसा का रहने वाला हैं और हमारे कुलदीप भैया शेखावत जी, जो कि सीकर के बिराजने वाले हैं। मैं उस 22 दिसम्बर 1985 को याद करता हूँ तो मेरे को लगता है, एक - एक पल, एक-एक क्षण मेरे सामने चित्रों की तरह गुजर रहा है। मैं सुन पा रहा हूँ जो 22 तारीख के पहले लगातार 16 तारीख से तैयारियाँ चालू हुई।

एक सेवा उस सेवा का एक छोटा-सा अंश प्रकल्प जैसे ही समापन होने लगे और समापन के पूर्व ही सेवा के अन्य प्रकल्प की योजनाएं बनने लग जावें तो समझना चाहिए ठाकुर की कृपा से सेवा हो पा रही है।

हमारे पूज्य राजमल जी भाईसा तो कहा करते थे। कैलाशजी सेवा कहीं कर पाते हो? हम तो सेवा के समुद्र के किनारे बैठ के सेवा रूपी लहरों के दर्शन कर रहे हैं। सेवा की थी उन सभी माँ ने, उनके पास कोई भी साधन नहीं थे। छुआछूत भी बहुत थी, उस जमाने में भीड़ को कोई स्पर्श हो जाये तो उसको डाँट पड़ती थी।

एक बार किसी ने बहुत गुस्से में कहा अरे दुष्ट! अरे दुष्ट! तुम्हारी छाया मेरे पर पड़ गई तुम मेरे से स्पर्श हो गये। मेरे को तो वापिस स्नान करना पड़ेगा। दूर हो जा मेरे सामने से दुष्ट - के। उस व्यक्ति ने कहा जी भाई साहब माफी चाहता हूँ। आपको शायद एक बार स्नान करना पड़ेगा। मुझे तो पुनः तीन बार स्नान करना पड़ेगा। बोले कैसे - कैसे बोले आपको तो मैं छू गया और मेरे को आपके अन्दर का क्रोध रूपी चाण्डाल छू गया, जो क्रोध आपको इतना भयंकर आ गया। आपके अंदर के चाण्डाल ने मेरा स्पर्श कर लिया। मुझे तीन बार स्नान करना पड़ेगा। कहाँ भूल गये? हम अपने साथियों के पास नहीं जा पाये वर्षों तक। उनके घावों पर मरहम नहीं लगा पाये वो रोते रहे, वो चिल्लाते रहे, वो तड़पते रहे, वो भूखे रहे, वो प्यासे रहे। और हम अपने महलों में कहीं कर्मकाण्ड करने में इतने मशगूल हो गये। कर्मकाण्ड करना चाहिए मैं तो कर्मकाण्ड स्वयं करता हूँ।

मैं जब 1982 में एक माह शांतिकुंज हरिद्वार में रहा। मुझे लगा मैंने एक जन्म और ले लिया। प्रातःकाल 3 बजे उठके। करीबन 8-10 शौचालयों की सफाई मैं किया करता था। मैंने चलके श्रमदान लिया था। मैंने कहा मुझे वो काम बताईये जो दुनिया में सबसे छोटा समझते हैं। उस समय पलश वगेरह के लेटरिंग नहीं होते थे। उस समय टोकरे रखे जाते थे। मानव जाति में भेद जब-जब भी हमने किया, मेरा भारत कमजोर पड़ा। तो सेवा की बात कर रहा था। कात्याफला की बात कर रहा था। 22 तारीख को शिविर करना है। सभी माता को प्रणाम कर रहा था। जो परिवर्तन कर लें, जो बदलाव ले आवें, जो अपनी कठोरता को नरम में बदल ले, अँगुली माल का स्मरण कर रहा था। कितनी दुष्टता अँगुलामाल अँगुलियों काट के माला पहन लेता था इतना हिंसक था। लेकिन भगवान बुद्ध का ओरामण्डल उनका प्रभामण्डल उनके चरित्र का सेवामण्डल उनकी तपस्या विपश्यना, साधना का, सेवामण्डल वो अँगुलामाल चरणों में गिर पड़ा। लाला जब वाड़ाफला से लौट रहे थे बस में उसके पूर्व निश्चित हो गया था कि अगला रविवार कात्याफला में जाना है। कैसे नाम पड़ा होगा कात्याफला का। मैंने पूछा था, मैंने कहा आपके इस आदिवासी क्षेत्र का नाम कात्याफला कैसे पड़ा? बोले हमारे यहाँ कथा ज्यादा होती है कथा एक जमाने में कथे का पूरा अधिकार आदिवासी को था वो कथा निकालता था। और कस्बों में आकर बेचना था उससे दाल-रोटी नमक - रोटी हो जाती थी, दाल भी नहीं मिलती थी। नमक रोटी, राबड़ी रोटी। मिर्ची रोटी, प्याज रोटी उसमें भी वो राजी था। फिर एक युग आया ठेकेदारी प्रथा चालू हुई। सरकार ने कात्याफला के आसपास के कत्थोड़िया परिवार हुआ करते थे। मैं तो बहुत गया कत्थोड़िया परिवार के बीच में उनके नाम भी कत्थोड़िया में प्रणाम करता हूँ उस समय के ऐडिशनल कलक्टर महोदया को जो डी.आर.डी.ए. की चीफ थी।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़



सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमन्दिताओं की सेवा में सतत संवसारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायताार्थ

श्रीरामकथा

आयोजक

श्री निताई गौर भक्त मण्डल, वैर

दिनांक एवं समय

03 से 09 अगस्त, 2016
दोपहर 3 बजे से सांय 7 बजे तक

10 से 11 अगस्त, 2016
सांय 7 बजे से रात्रि 11.00 बजे तक

स्थान

ए.एस.बी. इण्टर कॉलेज के पास, ग्राम-वैर, तह. सिकद्राबाद, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

कथा व्यास: पुज्य गौरदास जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करायेंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीरामकथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र: 9958163312, 9811436328
संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::



कमला देवी
कोषाध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान



वन्दना
निदेशक
नारायण सेवा संस्थान



जगदीश आर्य
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान



देवेन्द्र चौबीसा
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।

